पाठ 4. सिकंदर का न्याय

पाठ का परिचय

सिकंदर महान यूनान का सम्राट था। वह अपनी प्रजा के सुख-दुख का बहुत ध्यान रखता था। उसकी प्रजा भी उसे बहुत चाहती थी। उसके राज्य में एक खूँखार डाकू ने आतंक फैला रखा था। सैनिकों ने उसे पकड़ा और सिकंदर के सामने पेश किया। उसे देखने यूनान के लोग वहाँ इकट्ठे हो गए। सिकंदर ने कहा कि तुझे तेरे पापों की सज़ा दी जाएगी। क्या तू अपनी सफ़ाई में कुछ कहना चाहता है? डाकू ने निडर होकर राजा से कहा कि आप अपने दिल पर हाथ रखें और सोचें कि जिसने कितने ही मुल्कों को लूटा हो, हज़ारों घर बरबाद किए हों, खून का दरिया बहा दिया हो, तबाही का अंबार लगा दिया हो, वह क्या ज़ालिम और हत्यारा नहीं। सिकंदर की गर्दन नीचे झुक गई। ज़ुबान पर मानो ताला पड़ गया। कुछ देर बाद उन्होंने बंदी को रिहा करने का आदेश दे दिया। डाकू बादशाह के चरणों में झुक गया। वह एक भला इनसान बन गया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

जीवन में आने वाले हर सत्य को हमें समझकर अपना लेना चाहिए। हम तभी सबके प्रिय हो सकते हैं जब हम सच्चाई को स्वीकार करना सीख लें।

पाठ का वाचन

पहले कहानी का आदर्श वाचन करें। बच्चों से अनुकरण वाचन करवाएँ। उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। नए शब्दों को शुद्ध उच्चारणसहित बोलते हुए श्यामपट्ट पर लिखें। वाचन के दौरान बीच-बीच में बच्चों से प्रश्न पूछें। यह जानें कि उन्हें पाठ समझ में आया या नहीं।

महत्वपूर्ण चर्चा

कहानी से संबंधित निम्नलिखित प्रश्न पूछकर बच्चों के साथ चर्चा करें –

- सिकंदर के द्वारा दिया गया फैसला सही है या गलत? तर्कसहित बताओ।
- क्या तुम न्यायप्रियता की कोई अन्य कहानी जानते हो?
- क्या तुम डाकू के जीवन में आए परिवर्तन पर आधारित कोई अन्य कहानी बता सकते हो?
- तुम्हें कहानी में सिकंदर व डाकू में से किसका चरित्र अच्छा लगा और क्यों?